६३: उत्पादन विधि-१

दिनांक -२७-०२-२०१२

मानव जाति के सम्मुख उत्पादन के सम्बंध में कृषि, गौपालन सहित आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन सम्बंधी वस्तुएं स्पष्ट हो चुकी हैं | इनमें से किसी एक वस्तु को अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना ही समृद्धि का तात्पर्य है | यह प्रत्येक परिवार में जिम्मेदारी की बात है | प्रत्येक परिवार अपने में समृद्ध रहना चाहता ही है | इसे स्वायत्त, स्वावलंबी भी नाम दिया गया है | स्वतन्त्र भी नाम है | इसमें व्यापार और नौकरी समायी है | फलस्वरूप मानव उत्पादन कार्य किये बिना समृद्ध होने का कोशिश किया है | यह पूरा प्रयास सुविधा, संग्रह के अर्थ में स्पष्ट हो चुका है | सुविधा, संग्रह का तृप्ति बिंदु सर्वदेश सर्वकाल में होता नहीं, इसलिए पुनर्विचार की आवश्यकता आ गयी है | पुनर्विचार से यही निकलता है कि मानव अथवा सर्वमानव समृद्धि चाहता ही है | समृद्धि का बिंदु श्रम से जुड़ा है |

श्रम को सर्वदेश, काल में सर्व परिवार को अपनाना ही कार्यक्रम है | जो कुछ भी अपने पास है, मानता है, उसको भी श्रम करना आवश्यक है | जो कोई कुछ नहीं है, ऐसा मानता है उसको भी श्रम करना आवश्यक है, यह भी आज का सोचने की आवश्यकता है तथा मुख्य मुद्दा है | यदि हम मानव समझदारी से समाधान प्राप्त करते हैं तो श्रमशीलता स्वीकार करना बनता है | श्रमशीलता एवं समाधान के योगफल में समृद्धि का अनुभव कर सकतें हैं | इसे भली प्रकार से शोध किया है, अभ्यास कर देखा है | अभी की स्थिति में हर जवान अथवा प्रौढ व्यक्ति पहले समृद्धि की ओर दौड़ते हैं, बाद में समाधान को सोचेंगे ऐसा सोचते हैं, यह सफल होने की विधि नहीं है | यह मुख्य बात है | इस क्रम में समृद्धि के बाद समाधान सोचने की विधि से कभी भी समृद्धि का अनुभव होता ही नहीं है, और अधिक और अधिक का संख्या बना ही रहता है | समाधान के साथ समृद्धि परिवार की आवश्यकता के अनुसार बनता है | इस क्रम में जीने वाला मानव अर्थात हर नर-नारी इसको सोचना बनता है कि समृद्धि के बाद समाधान होगा या समाधान के बाद समृद्धि होगा |

इस मुद्दे पर जितने भी संख्या में आदमी द्वारा सोचा जाय, अन्ततोगत्वा हम समाधान के पश्चात ही समृद्धि को पाएंगे | समृद्धि के साथ कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधियों से नौ प्रकार से अभ्यास करना देखा गया है | परिवार में आवश्यकता इसी से स्पष्ट होता है, सीमित रहता है | हर परिवार में इसी प्रकार से आवश्यकता का निर्धारण की व्यवस्था है और कहीं निर्धारण होता नहीं | हर परिवार अपने समृद्धि के साथ ही पड़ोसी परिवार के साथ सहकारिता पूर्वक जीना बनता है | इसका मतलब यही है कि एक परिवार कुछ कुछ चीजें तैयार कर पाता है श्रमशीलता के साथ, फलस्वरूप विनिमय कार्य सम्पन्न होता है | इस क्रम में हर परिवार को आवश्यक वस्तु प्राप्त हो जाता है |

यही विनिमय का महिमा है | अतः हर परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की प्रवृत्ति बनती है | इसमें मुख्य बात है श्रमशीलता को स्वीकारना | अभी की स्थिति में यांत्रिकता के आधार पर श्रमशीलता को नकारना शुरू किये हैं | इसमें भी आदमी के जुड़े बिना यांत्रिकता सफल होता नहीं | इस क्रम में हर परिवार में श्रमशीलता स्वीकारने की आवश्यकता आती है | श्रमशीलता ही उत्पादन का आधार है | छः बिंदुओं(आहार, आवास आदि)में इंगित वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है | इस प्रकार आवश्यकता से अधिक उत्पादन ही समृद्धि है | सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज